RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-11
November -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

पीपली लाइवः कृषक जीवन के त्रासदी को साध्य के बजाय साधन बताती चलचित्र

*[1]अमित कुमार झा, [2]पूनम लखानी

[1]*UGC-Net समाजशास्त्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी*
[2]*एम. ए. अंग्रेजी, वसंता कॉलेज फॉर वीमेन (बी.एच.यू.)*

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 November 2018

Keywords
किसान, पीपली लाइव, आत्महत्या, परिवार

***Corresponding Author**
Email: amitjha9648[at]gmail.com

ABSTRACT

भारतीय सिनेमा के विकास के इतिहास को देखे तो समय समय पर निर्देशों के अपने फिल्म के माध्यम से किसान के समस्या को दिखाने का प्रयास किया है। इन फिल्मों में एक प्रसिद्ध फिल्म पीपली लाइव आयी थी जिसका निर्देशन अनुषा रिजवी ने किया था। इस फिल्म में किसान जो बैंक के कर्ज में फसाँ जाता है। इस कर्ज से निकलने के लिए और अपनी जमीन बचाने के लिए नत्था द्वारा आत्महत्या का फैसला लिया जाता है। अपने इस फैसले से वह सुर्खियों में आता है। सरकार उसे बचाने का जो भी लेता वो मात्र एक दिखावा रहता है। फिल्म के अंत में सब यह जानते है की नत्था मर गया है फिर भी उसका परिवार सरकार के कागजी करवाई में फस कर रहा जाता है। नत्था इन सभी से दूर शहर में एक मजदूर के रूप में काम करने लगता है।

प्रस्तावना –

जब भी कभी वैश्विक क्षितिजपर भारत का नाम लिया जाता है और उस नाम की मूर्त संकल्पना जब भी हम अपने मानस पटल पर करते है तो हमारे सामने भारत के फसलों से ललहाते खेत, खेतों में काम कर रहें किसानों एवं उनके कामों में हाथ बटा रहे उसके मासूम परिवार की छवि हमारे मानस पटल पर उभरने लगती है। भारत आदि काल से ही अपने उन्नत ज्ञान और कृषि के लिए सम्पूर्ण विश्व में विख्यात था। वह अपने इसी ज्ञान और वैभव से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करता रहा है। भारत की ज्ञान की अमूल्य निधि के रूप में तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालय को जान सकते है। वही दूसरी तरफ इसके कृषि और वाणिज्य का विकास भी अपने चरम पर था सभी पड़ोसी देशों से भारत का व्यापार होता था। भारत की आर्थिक संवृद्धि सम्पूर्ण विश्व में अपनी ख्याति अर्जित कर चूका था। जिसका खामियाजा भारत को अनेक विदेशी आक्रमण के रूप में भुगतना पड़ाद्य औपनिवेशिक काल में तो भारत की स्वायत्तता तो लगभग समाप्त हो चुकी थी। भारत पूरी तरह से ब्रिटिश उपनिवेश का गुलाम हो गया। भारत की सम्पनता ही इसके गुलामी के मूल जड़ में थी। भारत की संवृध्दि का मुख्य कारण यहाँ की कृषि परम्परा है। भारतीय किसान भूमि को भूमि ना मानकर उन्हें अपनी माँ मानते है। भूमि भी इन्हें अपनी पुत्र मानकर ललहाती फसलों के रूप में अपनी मातृत्व का बोध कराती है।

जो किसान भारत के संवृद्धि का प्रतिक था वह समय के धीरे–धीरे उपेक्षा का शिकार होते गये। जिसको सबसे पहले गाँधी जी ने चम्पारण आंदोलन के द्वारा इसे समझने का प्रयास किया। गाँधी के आंदोलन से मात्र उन्हें क्षणिक लाभ प्राप्त हुआ। किसानों के वंचना और शोषण की त्रासदी आज भी अनवरत जारी है। अब वो गाँधी जी नहीं है जो किसान के आवाज को अहिंसात्मक तरीके से रख सके।

आजादी के आज ७० वर्ष के बाद भी देश के सभी तबके में कमोबेश परिवर्तन आया है उन के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। परन्तु किसान आज भी उपेक्षा का शिकार है। आजादी के ७० वर्ष के दौरान तमाम पार्टियों की सरकार बनी। तमाम तरह की योजनाये चलायी गयी परंतु किसान की सामस्या आज भी सुरसा राक्षसी की तरह मुँह खोले खड़ी है।

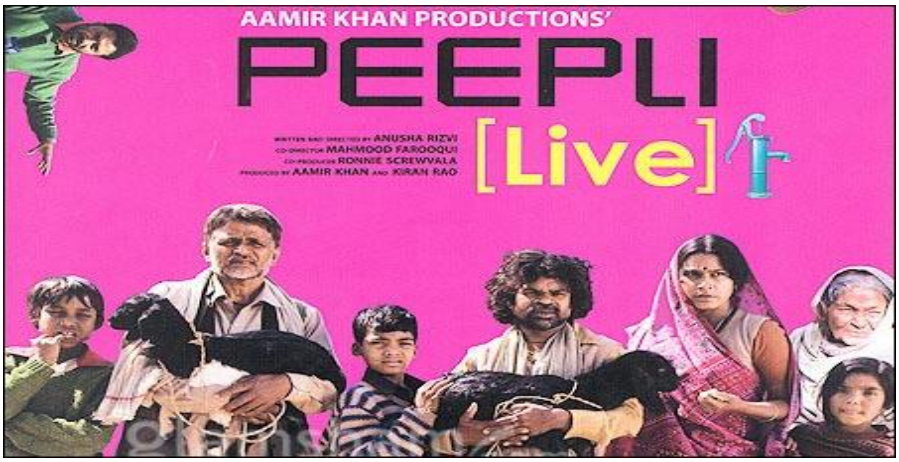

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारतीय किसान के जीवन के त्रासदी को जहाँ विभिन्न लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। परन्तु इन सभी लेखकों में मुंशी प्रेमचंद्र का नाम अग्रगण्य है। जिन्होंने अपनी लेखन के किरदारों के माध्यम से किसान के जीवन जिस त्रासदी को प्रस्तुत किया था वह आज भी प्रसांगिक लगता है। साहित्य के अलावा भारतीय किसान के स्थिति को सिनेमा के विशाल पर्दे पर भी प्रस्तुत करने का कार्य समय–समय पर बिमल रॉय,सत्यजीत रे ,श्याम बेनेगल जैसे मर्मज्ञ निर्देशक करते रहे है। इन फिल्मों में दो बीघा जमीन ,मदर इंडिया ,पुकार, लगान, उपकार जैसी प्रमुख फिल्में है। समकालीन समय में कृषक जीवन के त्रासदी को प्रस्तुत करने का कार्य निर्देशिका अनुषा रिजवी ने अपनी फिल्म पीपली लाइव सिनेमा के माध्यम से करती है।

कृषक जीवन के त्रासदी –

फिल्म के प्रारम्भ में ही नत्था को भागते हुए दिखाया गया था। जब वह शहर जाता है जहाँ उसे बैंक के द्वारा यह कह दिया जाता है की कर्ज की किस्ती ना चुकाने के कारण उनका जमीन नीलम करने की सूचना उसको दिया जाता है। नत्था वास्तव में अपनी उस सभी समस्या से दौड़कर छुटकारा पाना जाता है जिस दुष्चक्र में वह फंस गया है। इस दुष्चक्र से निकलने के नत्था और बुधिया गांव के नेता के पासचुनाव के समय काम मांगने के लिए जाता है, पर मना किये जाने पर बुधिया एवं नत्था को निराशा हाथ लगती है। उन्हें नेता के पास ही कोई यह कहता है की खुदखुशी करने वाले किसान के परिवार को सरकार एक लाख का मुआवजा देगी और आत्महत्या कर लेने पर मुआवजा पक्का है।

नत्था और बुधिया अपनी पैतृक संपत्ति को यूही अपनी हाथों से जाते हुये नहीं देख सकता था। भरतीय समाज में आज भी कृषक धरती को माँ कहते है। उसे अपनी पूर्वजों के धरोहर के रूप में देखते है। वह अपनी धरोहर को किसी और के हाथों में जाते हुये नहीं देख सकते थे। इसीलिए उन्होंने आत्माहत्या के बाद मिलने वाले पैसे से अपनी गिरवी रखे हुये जमीन को छुड़ाने का फैसला लियाद्य नत्था और बुधिया में से नत्था ने आत्महत्या करने का फैसला लिया।

भारतीय समाज की यह बिडम्बना है की इस कर्ज के दुष्चक्र में न सिर्फ नत्था और बुधिया जैसा किसान फसाँ हुआ है बल्कि समाज का वह हर एक किसान फसाँ हुआ है जो अतिवृष्टि –अनावृष्टि, महँगी बीजों जैसे समस्याओं से जूझ रहा है। उसकी लागत जिस तुलना में बढ़ती है उसकी अपेक्षा में आगत नहीं बढ़ पाती है। वह किसान हमेशा गरीबी के दुष्चक्र में फसाँ रहता है। इस दुष्चक्र से निकलने के लिए किसान के सामने एक ही विकल्प नजर आता है वह आत्महत्या का जिसका फैसला नत्था लेता है। समकालीन समय में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश जैसे कृषक बाहुल्य वाले क्षेत्र में अधिकांश किसानों के आत्महत्या की खबर सुनाई देती रहती है।

नत्था के द्वारा आत्महत्या के फैसले को जब स्थानीय पत्रकार राकेश (नवाजुद्दीन सिद्दकी) ने अपने एक लेख में इस माध्यम से समाज के सम्मुख रखा। इस खबर से सम्पूर्ण राजनीतिक दल ,मिडिया और सरकारी अफसरों के बीच के सनसनी खबर बन गयी। चुनाव का समय होने के कारण राजनीति दल को अपने सियासी रोटी सेकने का मौका मिल गया। मिडिया को एक सनसनी खबर मिल गयी थी जो उनके लिए एक टी .आर. पी का माध्यम नजर आ रहा था। सरकारी अफसर के द्वारा भी किसान का मजाक ही उड़ाया जा रहा था।

मुख्यमंत्री का चुनावी क्षेत्र होने कारण कारण यह आत्महत्या का मुद्दा और भी तूल पकड़ लिया था। टेलीविजिन के समाचारदातों को एक सजीव आत्महत्या को दिखाने का मौका मिल जाता है। सभी समाचारदाता उस गांव में पहुंचकर उस खबर को अपनेढंग से दिखाने का प्रयास करते है। नेता अपने लाभ के लिए एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाने लगते है। उस किसान से किसी को भी किसी भीप्रकार का सहानभूति नहीं रहता है। मिडिया वालों के लिए बस एक सनसनी खबर रहती है नत्था की आत्महत्या। धीरे–धीरे उस छोटे पीपली गांव में पत्रकारों की जमघट लग जाती है। सब अपने स्तर से उस खबर को एक सनसनी के रूप में दिखाने का प्रयास करते है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अपनी राजनैतिक उद्देश्य के कारण जन समाज दल का पप्पू लाल जो की विपक्ष का नेता रहता है जो की उस जाती विशेष का रहता है जिस जाती का नत्था रहता है। जिस कारण वो नत्था के आत्महत्या को एक जातिगत रूप देने का प्रयास करता है। उसके सम्मान में उसे उपहार स्वरूप उसे एक टी.वी देता है। जो एक प्रकार का उस किसान के परिस्थिति के लिए व्यंग ही है जो अपनी मूलभूत आवश्यता को पूरा नहीं कर पा रहा है। भुखमरी का शिकार हो रहा है। वह उस विलासिता की वस्तु टी.वी को लेकर क्या करेगा। वही सरकार के लिए भी वह उपेक्षा का पात्र ही है। सरकार उसे आत्महत्या से रोकने के लिये लाल बहादुर शास्त्री पुनर्वास योजना के तहत लाल बहादुर के रूप में एक हैंड पम्प देता है। जो उस किसान के मुँह पर गरीब होने का एक तमाचा है। वह किसान उस हैंड पम्प को लेकर क्या करेगा जो कर्ज के बोज में दबा है उसके पास तो उतना पैसा भी नहीं है की वो उसे जमीन में गरवा सके। इस पुरे घटना क्रम में पीपली गांव में एक प्रकार का मेला लग जाता है। जहाँ किसी के मौत की खबर से कई परिवार का जीवन चल रहा होता है। जहाँ गांव वाले को नत्था के मरने का गम था वही उसे अपने लिये आर्थिक उपार्जन के नया साधन मिलने पर खुशी भी है।

फिल्म में तत्कालीन कृषि मंत्री सलीम (नसीरुद्दीन शाह) किसान के आत्महत्या को रोकने के लिये औद्योगीकरण की बात कहते है। औद्योगीकरण के कारण ही सरकार गरीबों के जमीन को अधिकृत कर कंपनियों को देता है। जिससे किसान विकास के नाम पर अपनी उपजाऊ भूमि पर बड़े–बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठान को स्थापित होते देख रहे है। गरीब किसान के लिये सरकार द्वारा चलायी जाने वाली तमाम योजन जैसे–जवाहर रोजगार योजना, अन्नपूर्णा ग्रामीण योजन, अवरुद्ध तरक्की जैसी तमाम योजना के काबिल वो गरीब किसान नहीं है क्यों की वह किसान सरकार के उस उस कागजी पैमाने पर गरीब नहीं है।

इस फिल्म के अंत में इस आग हादसे में पत्रकार राकेश की मौत हो जाती है। परन्तु सब यह समझते है की उस हादसे में नत्था की मौत हो गयी है। नत्था की मौत की खबर सुनकर उस पीपली गावं से सभी पत्रकारों एवं नेताओं का जमघट चला जाता है। नत्था के मौत के तीन महीने के बाद भी नत्था के परिवार को उसके मौत का मुआवजा नहीं मिलता है क्योकि नत्था की मौत एक हादसा में हुआ था ना की आत्महत्या के द्वारा। भारतीय किसान अपनी मौत के बाद भी सरकार के कागजी कारवाही में फस कर रह जाता है। उसका परिवार आर्थिक संकट में फसाँ ही रहता है।

निष्कर्ष –

इस फिल्म में किसान जीवन के उस सभी त्रासदी को दिखाने का प्रयास किया है जिसका वो समकालीन समय में शिकार है। जहाँ किसान एक ओर राजनीतिक दाल के लिये वोट बैंक है वही दूसरी ओर वह मिडिया जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है उसके लिये वो मात्र एक सनसनी खबर है। सम्वेदनात्म भाव समाज में धीरे –धीरे खत्म होती जा रही है। फिल्म के अंत में समाज ,मिडिया और सब के लिये मार दिया जाता है। वह इस सम्पूर्ण त्रासदी से बहार निकल कर शहर की ओर पलायन कर छुपकर मजदुर बन जाता है। जहाँ उसे अब कोई नहीं पहचान सकता है। जिसके आत्महत्या करने का इंतजार सब कर रहा हो।

वहाँ वह उन सब की निगाहों से आजाद और बेखौफ है। सिर्फ नथ्था ही नहीं है भारत का अधिकांश किसान कृषि को छोड़कर रोजी रोटी के कारण शहर की तरफ पलायन करने को मजबूर है। यह बात समाज के लिये विमर्श का विषय है की जब अन्नदाता ही नहीं रहेंगे तो हमें अन्ना कौन देगा। बिना अन्न के हम एक स्वस्थ समाज की कल्पना नहीं कर सकते है। अगर इसी तरह किसान अपने कृषि कर्म से विमुख होते जायेंगे तो भरत को उन देशों की श्रेणी में आने में देर नहीं लगेगी जो खाद्यान जैसी समस्याओं का सामना कर रही है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. पटनायक,किशन ,किसान आंदोलन दशा और दिशा , २००६, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली
2. प्रियदर्शन, नया दौर का नया सिनेमा,२०१५, वाणी प्रकाशन , नयी दिल्ली
3- Beteille, A. (1965). Caste, Class and Power: Changing Patterns of Stratification in a Tanjore Village, University of California Press.
4- Rajadhyaksha,Ashish and paul wilemen, Encyclopaedia of Indian cinema ,2012,Routledge,London
5- https://en.wikipedia.org/wiki/Peepli_Live
6- http://movies.ndtv.com/movie-reviews/movie-review-peepli-live-539
7- https://www.indiatoday.in/movies/reviews/story/film-review-peepli-live-80327-2010-08-13

RRIJM 2015, All Rights Reserved